ISSN: 2393-8048
Venue: Sant Shri Prannath Parnami PG College, Padampur
15 Dec 2019

समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना

पृथ्वी राज, विधार्थी, हिंदी विभाग, महाराजा गंगा सिंह विशवविद्यालय, बीकानेर

सारांश

समकालीन हिंदी कविता अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने वाली महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है। आधुनिक कवियों ने व्यक्तिगत अनुभूति के साथ-साथ गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, शोषण, भ्रष्टाचार, राजनीतिक व्यवस्था और आम नागरिक की समस्याओं को भी अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समकालीन हिंदी कविता में व्यक्त सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना का अध्ययन करना है। कविता में आम आदमी के जीवन-संघर्ष, लोकतांत्रिक मूल्यों, सत्ता-संरचनाओं तथा सामाजिक विसंगतियों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। कवि अपने समय की राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रश्न उठाते हुए सामाजिक परिवर्तन और मानवीय संवेदना की आवश्यकता को रेखांकित करता है। समकालीन हिंदी कविता में व्यंग्य, प्रतिरोध और जनपक्षधरता के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टि से कविता केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति न रहकर सामाजिक जागरूकता और लोकतांत्रिक चेतना के निर्माण का माध्यम भी बनती है।

मुख्य शब्द: समकालीन हिंदी कविता, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, जनपक्षधरता, सामाजिक यथार्थ, प्रतिरोध, लोकतंत्र